SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

दांडी

पंचम अंक, वर्ष-2023

कार्यालय प्रधान महालेखाकार - (लेखापरीक्षा-I)
राजकोट-360001 - (गुजरात)

26 जनवरी के अवसर पर श्री डी.आर.पाटील,प्रधान महालेखाकार महोदय कार्यालय के कार्मिकों को संबोधित करते हुए।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
गुजरात, राजकोट - 360001
हिंदी दिवस / हिंदी पखवाड़ा समारोह
दिनांक 18.09.2023 से 29.09.2023 तक

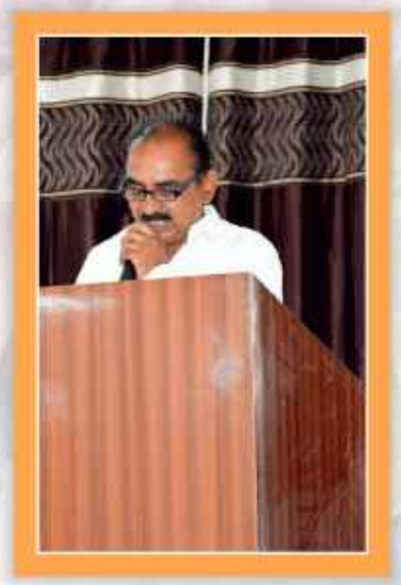

दांडी परिवार

प्रकाशन

"दांडी"

कार्यालयीन हिंदी गृह-पत्रिका

प्रकाशक

महालेखाकार

(लेखा एवं हकदारी),

राजकोट का कार्यालय एवं

अहमदाबाद शाखा कार्यालय,

गुजरात

दांडी

पंचम अंक, वर्ष-2023

मुखपृष्ठ

श्री सोमनाथ मंदिर

गुजरात

मूल्य

राजभाषा हिंदी के

प्रति निष्ठा व समर्पण

मुद्रक

अक्षर ग्राफिक - राजकोट

संरक्षक

श्री डी. आर. पाटील

प्रधान लेखाकार

प्रधान संपादक

श्रीमती वीनस चौधरी

वरिष्ठ उप महालेखाकार

मुख्य संपादक

श्रीमती कल्पना सामंत

उप-महालेखाकार

संपादक

श्री के. जे. पण्डया

व. लेखापरीक्षा अधिकारी

(प्रशासन)

श्री संजय कुमार

हिंदी अधिकारी

सह संपादक

श्री सूरज कुमार दास

वरिष्ठ

हिंदी अनुवादक

सुश्री नंदनी साव

कनिष्ठ

हिंदी अनुवादक

श्री विशेष कुमार त्रिपाठी

कनिष्ठ

हिंदी अनुवादक

अस्वीकरण : पत्रिका में दिए गए लेखों की मौलिकता संबंधी ज़िम्मेदारी तथा उनके द्वारा व्यक्त विचार रचनाकारों के स्वयं के हैं। संपादक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

हिंदी वार्षिक पत्रिका "दांडी" अंक-पंचम

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	विवरण	पृ.सं.
❖ ❖ ❖ ❖	संदेश प्रधान संपादकीय मुख्य संपादकीय सह संपादकीय	प्रधान महालेखाकार महोदय वरिष्ठ उप-महालेखाकार महोदया/प्रशासन उप-महालेखाकार महोदया हिंदी अनुभाग की कलम से		3-5
1.	राजभाषा से विश्वभाषा कीओर हिन्दी के बढ़ते कदम	श्री बी.वी. दिलीप ,वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	8
2.	एक पैगाम हिंदी के नाम	श्री डी.डी.गौड, हिंदी प्रभारी	लेख	10
3.	गहरी बातें-ज़िंदगी का सच	श्री देवेन्द्र कुमार वर्मा, स.ले.प.अ.	कविता	12
4.	इंसानियत मर गई	श्री सुनील कुमार-III, स.ले.प.अ.	कविता	13
5.	परिवर्तन जीवन का नियम है	श्री संजय कुमार, हिंदी अधिकारी	लेख	15
6.	जीवन दृष्टि	श्रीमति सुनीता, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	लेख	16
7.	स्वयं की ख़ोज	सुश्री नंदनी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	लेख	17
8.	छोटी सी ज़िंदगी	सुश्री प्रेरणा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	19
9.	सोशल मीडिया-एक दो-धारीतलवार	श्री हरीश कुमार, स.ले.प.अ.	लेख	20
10.	प्रेम से बढ़कर	श्रीमति सुनीता, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	कविता	23
11.	नियुक्ति पत्र प्राप्ति पर साथियों को संबोधन!!!!	श्री विशेष कुमार त्रिपाठी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	कविता	22
12.	हिंदी भाषा व अंग्रेजी भाषा के मध्य प्रतिस्पर्धा	श्रीगिरिराज, लेखापरीक्षक	कविता	24
13.	वास्तविक भारत	श्री अनुराग श्रीवास्तव, स.ले.प.अ.	कविता	26
14.	आधुनिक सामाजिक मंच	श्री दीपक गुप्ता, स.ले.प.अ.	लेख	27
15.	माँ	श्री दशरथ सिंह, स.ले.प.अ.	कविता	29
16.	बच्चियाँ अलविदा कहने आयी है	श्री सूरज कुमार दास, वरि. हिंदी अनुवादक	कविता	30
17.	मेरी सेवा-निवृति	श्री वी.डी. पंडया, पर्यवेक्षक	कविता	32
18.	मानव धर्म	श्रीमति सुनीता,कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	लेख	33
19.	नौकरी का सफर	सुश्री नंदनी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	कविता	34
20.	मै तो बाप हूँ	श्री राज कुमार मान, स.ले.प.अ.	कविता	35
21.	प्रेरक प्रसंग	सुश्री नंदनी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	लेख	36
22.	अभ्यास: जीवन के मूल मंत्र	सुश्री प्रेरणा,वरिष्ठ लेखापरीक्षक	लेख	37
23.	चिंताओं से दूर रहे	श्रीएन.बी.वाजा,वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	38
24.	नारी की गाथा	श्रीमती प्रिंसी अग्रवाल, आशुलिपिक	कविता	40
25.	माँ	श्रीगिरीश उनागर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	41
26.	ज़िंदगी का सफर	श्री अमित राज वर्मा स.ले.प.अ.	लेख	42
27.	ज़िंदगी	श्रीगिरीश उनागर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	43
28.	अंतहीन अंत	श्री गिरिराज, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	44
29.	प्रतिवेदन: टीजीएस के तहतई.एल.एफ.ए के लिए प्रशिक्षण	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(टी. जी. एस)		45
30.	"गर" होता वो मेरा	श्री प्रशांत शर्मा, लेखापरीक्षक	कविता	48

संरक्षक की कलम से...

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के इतिहास में हिंदी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है बल्कि सारे भारत की संपर्क भाषा भी है।

इस वर्ष कार्यालय की **"दांडी"** हिंदी पत्रिका का पंचम अंक प्रकाशित हो रहा है। मुझे विश्वास है कि **"दांडी"** पत्रिका का यह अंक कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कार्यान्वयन को प्रेरित करेगा। पत्रिका के प्रकाशन में योगदान करने वाले सभी अधिकारी व कर्मचारी प्रशंसा के पात्र है। मैं सभी को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति की कामना करता हूँ।

"दांडी" पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री डी.आर. पाटील
प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-I), राजकोट

प्रधान संपादक की कलम से...

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की वार्षिक पत्रिका **"दांडी"** के पांचवे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी केवल विचार प्रकट करने का एक माध्यम नहीं बल्कि यह तो सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है।

कार्यालय में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान होता है। मैं आशा करती हूँ कि **"दांडी"** पत्रिका का यह अंक सभी पाठकों को हिंदी में काम करने की प्रेरणा देगा।

शुभकामनाओं सहित मैं **"दांडी"** पत्रिका के प्रकाशकों को बधाई देती हूँ।

वीनस चौधरी

श्रीमती वीनस चौधरी
वरिष्ठ उपमहालेखाकार/प्रशासन

मुख्य संपादक की कलम से...

यह हम सब का संवैधानिक कर्तव्य है कि कार्यालयीन काम-काज में सरल हिंदी का प्रयोग अधिकाधिक कर राजभाषा के संवर्धन में अपना योगदान दें। कार्यालय में हिंदी के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहभागी कार्यालय के सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों का मैं धन्यवाद व्यक्त करती हूँ।

अधिकारी/ कर्मचारी न केवल कार्यालयीन काम-काज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं अपितु प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस के आयोजन के अवसर पर हिंदी पखवाड़े के दौरान हो रही प्रतियोगिताओं में भी बढ़-चढकर भाग ले रहे हैं।

मैं माननीय प्रधान महालेखाकार (संरक्षक) महोदय का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने हर कदम पर हमे बहुमूल्य मार्गदर्शन किया हैं। इस आशा के साथ कार्यालय की वार्षिक पत्रिका **"दांडी"** कापाँचवाँ अंक पाठकों को समर्पित है और उम्मीद करती हूँ कि **"दांडी"** पत्रिका को और बेहतर बनाने हेतु आप सभी के बहुमूल्य सुझाव मिलते रहेंगे।

श्रीमती कल्पना सामंत
उप-महालेखाकार

राजभाषा से विश्वभाषा की ओर हिन्दी के बढ़ते कदम

श्री बी. वी. दिलीप
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

"चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी
बीस कोस पर पगड़ी बदले, तीस कोस पर धानी"

भारतेन्दु हरिश्चंद्र का यह कथन वैश्वीकरण के इस दौर में एकदम सटीक जान पड़ता हैं, जब यह कहा जा रहा हैं कि भविष्य में विश्व की केवल दस भाषाएँ ही जीवित रहेंगी, जिनमें हिन्दी भी एक होगी। वैश्वीकरण एवं पूंजीवाद के संदर्भ में हिन्दी का महत्व इसलिए और भी बढ़ेगा क्योंकि भारत एक व्यावसायिक, व्यापारिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से एक विकसित देश बनता जा रहा हैं।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने के साथ-साथ इसे सयुंक्त राष्ट्र संघ की सातवी आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकृति दिलाने के प्रयास किए जा रहें हैं। विश्वभाषा से अपेक्षा होती हैं कि उसे बोलने-समझने वालों का विस्तृत भौगोलिक विस्तार हो अर्थात केवल एक क्षेत्र विशेष की भाषा को विश्वभाषा नहीं बनाया जा सकता। इस आधार पर हिन्दी विश्व भाषा हैं क्योंकि इसके बोलने एवं समझने वाले संसार के सब महाद्वीपों में फैले हैं। सबसे अधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषाओं में हिन्दी का संसार में तीसरा स्थान हैं।

दूसरी अपेक्षा हैं कि वह भाषा लचीली हो और विभिन्न भावनाओं को व्यक्त करने में समर्थ भी। वर्तमान में अनुवाद की गुणवत्ता भी बेहतर होने से हिन्दी की स्थिति और बेहतर हुई हैं। इंटरनेट पर भी हिन्दी की स्वीकार्यता एवं लोकप्रियता बढ़ रही हैं। विश्वभाषा से तीसरी अपेक्षा हैं कि भाषा में वसुधैव कुटुंबकम का भाव हो। हिन्दी भाषा का किसी देशी या विदेशी भाषा से कोई विरोध नहीं हैं। अनेक भाषाओं के शब्द हिन्दी भाषा द्वारा अपनाए गए हैं और वे सदैव हिन्दी भाषा का अभिन्न अंग रहेंगे। यही कारण हैं कि हिन्दी का शब्दकोश विश्व का सबसे बड़ा भाषिक शब्दकोश हैं।

इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा के उपलब्ध साहित्य की व्यापकता एवं उसके स्तर, अंतर्राष्ट्रीय संपर्कों, वाणिज्य एवं सेवाओं में उपयोग तथा भाषा से संबन्धित देश का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक एवं सामरिक महत्व के आधार पर भी इसे विश्व भाषा बनाए जाने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। वर्ष 2019 में "अबूधाबी" ने न्याय की पहुँच में सुधार लाने के प्रयास में अरबी और अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी को भी तीसरी आधिकारिक अदालत की भाषा के रूप में शामिल किया गया हैं क्योंकि वहाँ की जनसंख्या में सिर्फ अमीरात में ही तीन करोड़ से भी अधिक प्रवासी लोग रहते हैं और भारतीय की संख्या उनमे सबसे अधिक हैं।

काफी समय से हिन्दी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकृति दिलाने की पुरजोर कोशिश की जा रही है। वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ की छ: आधिकारिक भाषाएँ है-

अंग्रेजी,फ्रेंच,स्पेनिस,रशियन,चीनी और अरबी। जहा तक बोलने वालों का प्रश्न हैं फ्रेंच, स्पेनिस, रशियन, और अरबी हिन्दी के आस-पास भी नहीं हैं। उपरोक्त छ: भाषाओं में चीनी और अरबी का संघ के कार्यों में अपेक्षाकृत कम ही प्रयोग होता है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद फ्रेंच और जर्मन भाषाओं का महत्व कम होता चला गया और केवल रशियन और अंग्रेजी ही मुख्य भाषा रह गई। रूस के मित्र पक्ष में रहने से चीनी भाषा का भी विस्तार और महत्व बढ़ता गया। अरबी भाषा साहित्य समृद्ध होने के बाद भी अरब देशों की राजनीतिक दुर्बलता के कारण दबी रही पर तेल के भंडारों से अरब देश के भाग्य पलटे एवं धन के ज़ोर से ही अरबी भाषा राष्ट्र संघ की छठी अधिकृत भाषा हो गई।

फिर भी हिन्दी भाषा को विश्व भाषा बनाए जाने में अनेक कठिनाइयाँ हैं। यदि हम अपने स्वयं के जीवन से ही उदाहरण ले तो पाएंगे कि आज हर माता-पिता अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा के लिए अच्छे विद्यालय में प्रवेश दिलाते हैं। लेकिन इन विद्यालयों में स्वदेशी से अधिक विदेशी भाषाओं पर ध्यान दिया जाता हैं एवं शिक्षा का माध्यम भी विदेशी भाषा ही रखा जाता हैं। लोगो को लगता हैं कि रोजगार के लिए हिन्दी में कोई विशेष अवसर नहीं हैं, जबकि सबसे अधिक सम्मानित एवं कठिन मानी जाने वाली भारतीय सिविल सेवा के लिए भी हिन्दी माध्यम स्वीकार किया जाता हैं।लाखों की संख्या में केवल विदेशी भाषा में शिक्षित छात्रों की उस पलटन से क्या लाभ जिनमे हिन्दी में एक प्रार्थना पत्र लिखने की भी क्षमता नहीं।

उपर्युक्त सभी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए विश्व राजनीति में बढ़ती भारत की साख और आर्थिक सशक्तिकरण के दौर में हिन्दी को विश्व भाषा का दर्जा दिलाने का इससे अच्छा सुअवसर नहीं मिल पाएगा परंतु पहले सबसे बड़ी लोकतान्त्रिक व्यवस्था वाले इस देश में स्वयं हिन्दी का सम्मान किए जाने की आवश्यकता है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के शब्दों में "हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया है।"अत: भारत देश में स्वयं भारती का बहिष्कार न हो इसलिए हमें अपनी भाषा बोलते हुए गर्व का अनुभव होना चाहिए तथा जापान,रूस,चीन आदि शक्तिशाली देशों की भाति स्वयं को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत अपनी ही भाषा में करना होगा क्योंकि भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने भी कहा है,

"निज भाषा उन्नति अहै,सब उन्नति को मूल,

बिन निज भाषा-ज्ञान के,मिटत न हिय को शूल

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि,सब गुण होत प्रवीण,

पै निज भाषा-ज्ञान बिन,रहत हिन के हीना"

एक पैगाम हिंदी के नाम

श्री डी. डी. गौड़
हिंदी प्रभारी

जहां मानव जाति ने अपने उद्गार व्यक्त करना चाहे, तब भाषा की बात चली। वैसे तो इस दुनिया में अनगिनत बोलियां व भाषाएँ बोली जाती हैं लेकिन हिंदी भाषा में जो सरलता, तरलता व सौम्यता का गुण है वह किसी अन्य भाषा में नहीं तभी तो आज हिंदुस्तान के करोड़ों दिलों पर राज कर रही हमारी राजभाषा हिंदी है। यूं ही नहीं हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया अपनी भाषा-शैली की विशालता तथा अन्य भाषा व बोलियों को अपने में समाहित करने वाली हिंदी भाषा को हमारे देश के भाषा-विदो व महापुरुषों द्वारा राष्ट्रभाषा और राजभाषा ही नहीं बल्कि हिंदुस्तान के अस्सी प्रतिशत से अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली हिंदी को संपर्क भाषा का दर्जा भी प्रदान किया गया है।

आजादी की लड़ाई में हिंदी भाषा ने सभी भारतवासियों को एक सूत्र में बांधने का काम किया था। महात्मा गांधी का सत्याग्रह आंदोलन हो या नमक आंदोलन हर एक आंदोलन में हिंदी साक्षी रही और गुलामी की जंजीरों को तोड़ने में अपना योगदान दिया। आजादी के बाद जन राजभाषा की चर्चा चली तब भी हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा थी, जिसे उस समय सभी लोग बोलते, लिखते और समझते थे यही कारण था कि,हिंदी को हमारे देश की राजभाषा का दर्जा दिया गया। आइए जब राजभाषा की बात चली है तो आपको इसके बारे में कुछ बाते बता दूँ ताकि आप लोग इसके महत्व को समझकर अपना काम-काज हिंदी में कर सके।

वैसे तो आजादी के पूर्व ही हिंदी अपना स्थान प्राप्त कर चुकी थी किन्तु इसे राजभाषा का दर्जा प्रदान करने हेतु सन 1955 में प्रथम राजभाषा आयोग का गठन किया गया। तत्पश्चात राजभाषा अधिनियम, 1963 यथा संशोधित 1967 बनाया गया तथा भारतीय संविधान के 17वें भाग में राजभाषा उपबंधों का उल्लेख किया गया जिनमें अनुच्छेद 343 से 351 तक कुल 9 अनुच्छेद राजभाषा से संबंधित हैं। राजभाषा अधिनियम 1967 के पश्चात देश में व्याप्त क्षेत्रीय भाषाओं को ध्यान में रखते हुए राजभाषा नियम, 1976 भी बनाया गया जिसके आधार पर 'क','ख' व 'ग' क्षेत्रों को आधार मानकर राजभाषा कार्यान्वयन के लक्ष्य निर्धारित किए गए। राजभाषा के 12 नियमों में सबसे महत्वपूर्ण नियम-5 है जिसमें स्पष्ट तौर पर कहा गया है कि हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों के जवाब केवल हिंदी में ही दिए जाए। इसके अतिरिक्त धारा 3(3) भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना कि नियम-5 अर्थात धारा 3(3) के अंतर्गत भारत सरकार के सभी कार्यालयों में जारी होने वाले 14 प्रकार के दस्तावेजों को द्विभाषी रूप (Diglocform) में जारी करना अनिवार्य है। राजभाषा के कार्यान्वयन को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकारों तथा संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों 'क','ख' व 'ग' में विभाजित किया गया है और इन क्षेत्रों के लिए पत्राचार तथा टिप्पण लेखन की प्रतिशतता भी क्रमश: पत्राचार के लिए 'क' से 'क'-100%,'ख' से 'ख' 90% तथा 'ख' से 'ग' के लिए 55% प्रतिशत तो टिप्पण लेखन की प्रतिशतता 'ख' क्षेत्र के लिए 50 प्रतिशत निर्धारित की गई है।

हिंदी में कार्य को गति देने हेतु भारत सरकार के द्वारा राजभाषा आयोग सहित केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा स्वयं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार हिंदी में प्रशिक्षण की व्यवस्था करता है तथा नियमित रूप से व पत्राचार के माध्यम से सभी कार्मिकों को अनवरत रूप से प्रशिक्षण देने का कार्य कर रहा है। भारत सरकार के सभी कार्यालयों में प्रशिक्षण हेतु नियमित हिंदी कार्यशालाए भी आयोजित करने का प्रावधान किया गया है। साथ ही राजभाषा के उचित कार्यान्वयन पर नजर बनाने हेतु क्षेत्रानुसार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन भी किया गया है। समय-समय पर सभी को प्रशिक्षण देने हेतु राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र कार्यरत है तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो अनुवाद कार्य के लिए स्थापित किया गया है।

इतना ही नहीं प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद कार्मिकों को उनकी योग्यता के आधार पर प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की जाती है तथा सभी को प्रोत्साहित करने हेतु भारत सरकार के सभी विभागों, मंत्रालयों में हिंदी सप्ताह, हिंदी पखवाड़ा प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में भी मनाया जाता है इस प्रकार, पूरे वर्ष हिंदी प्रशिक्षण देकर, हिंदी कार्यशालाएँ चलाकर तथा हिंदी पखवाड़ा व हिंदी दिवस मनाकर हम प्रयास करते हैं कि हिंदी में हम अधिक से अधिक कार्य कर सके न केवल निर्धारित लक्ष्य तक बल्कि लक्ष्य से अधिक कार्य करके हम प्रयास करते हैं कि हम मूल पत्राचार भी केवल हिंदी में ही कर सके।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है कि हमारे सभी के प्रयास, प्रोत्साहन व हिंदी के प्रति लगाव एक दिन रंग लाएगा और हम हिंदी को अपनाकर इसे राजभाषा के रूप में स्थापित करने का एक सराहनीय व राष्ट्रीय कार्य करेंगे। आज सूचना व प्रौद्योगिकी में जिस तरह हिंदी अपना स्थान बनाने में सक्षम है, समर्थ है, संपर्क भाषा के रूप में सभी लोग इसी में बात करते हैं तथा मनोरंजन की भाषा के रूप में तो हिंदी का जवाब नहीं। यही कारण है कि न केवल भारत बल्कि आज विश्व के अनेक देशों में हिंदी जानी पहचानी जाने लगी है, और अपना स्थान बना लिया है। इसी संकल्प के साथ कि हिंदी लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे हम अपना योगदान अवश्य करेंगे क्योंकि हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है बल्कि संपर्क भाषा के रूप में हमारी राष्ट्रभाषा भी है।

जय हिन्दी

गहरी बातें, ज़िंदगी का सच

देवेन्द्र कुमार वर्मा
स.ले.प.अ.

ज़िंदगी को जब ख़ाक में ही हैं मिलना,
तो उम्र भर का ये इम्तिहान कैसा?

ज़िंदगी जब अकेलेपन में ही हो ख़त्म,
तो उम्र भर रिश्तों का मान कैसा?

स्याही बन जाओ किसी के नाम के लिए,
खुद के नाम का सम्मान कैसा?

ज़िंदगी गुज़ार दो अपने कर्तव्य के लिए,
दूसरों से, खुद के लिए आस कैसा?

दांव पर लगा दो खुद की सारी ख्वाहिशें,
बिखर जाने का फिर गम कैसा?

कुछ वक़्त अगर खुद के लिए जीना चाहो,
दुनिया उठा देगी सवाल कैसा-कैसा?

'इंसानियत मर गई'

सुनील कुमार-III
स.ले.प.अ.

एक भीड़ सी लगी थी कहीं,कुछ चहल-पहल सी मच रही थी,
खामोश खड़े थे सभी, किसी ने पूछा क्या हुआ?
मैंने कहा...'इंसानियत मर गई'।

हैरान हैं हर कोई, परेशान कोई भी नहीं,
कोई धर्म पूछे, कोई जाति, कोई रिश्तेदार, कोई नाती,
कोई पुलिस को लगा बुलाने, कोई विडियो लगा बनाने,

मेरी आँखें देख ये सब डर गई।
मैंने कहा...'इंसानियत मर गई'।

सब, कातिल कौन हैं? पुछ रहे,
लाल खून के दाग तो सबके हाथों में लगे हैं।

न कोई कारण पता लगा, न कोई हथियार दिख रहा,
सब असमंजस में पड़े हैं, लेकिन चुप-चाप से खड़े हैं।
यह मंजर देख अब मेरी आँखें भर आई,
मैंने कहा...'इंसानियत मर गई'।

'जनाज़ा निकलेगा या अर्थी'? भीड़ आपस में सवाल हैं करती,
श्मशान-घाट या कब्रिस्तान? ये शर्मा हैं या खान?
लड़ने लगे सब आपस में, स्थिति नहीं थी अब बस में,
गुस्से से मेरी आँखें अब थोड़ी चढ़ गई
मैंने कहा...'इंसानियत मर गई'।

मैंने लाश से कपड़ा हटाया और भीड़ को बताया,
इसकी सूरत देखो, शायद तुमसे मिलती-जुलती हैं।
इतना कुछ होने के बाद, तुम्हारी बंद बुद्धि क्यों नहीं खुलती?
ये जो मरा हैं, ये शायद वो तुम हो, या मासूम हो तुम, या बेवकूफ़ हो तुम।

इस लाश पर किसी को सत्ता नहीं करने दूंगा।
'तुम मरी रहने दो इंसानियत, मैं अपनी इंसानियत मरने नहीं दूंगा।'

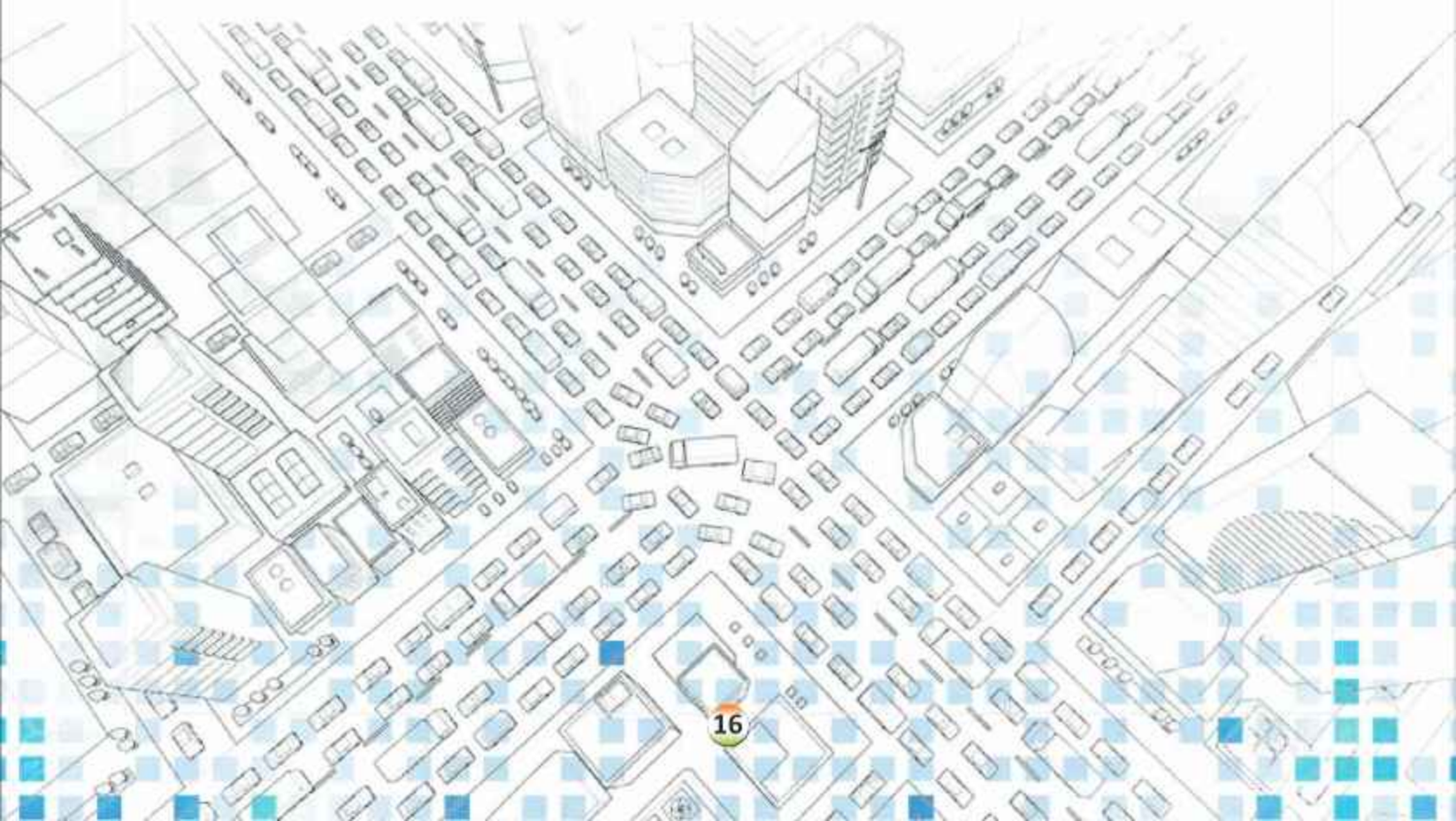

परिवर्तन जीवन का नियम है

संजय कुमार
हिंदी अधिकारी

एक पिता ने मरने के पूर्व अपनी वसीयत तैयार कर ली थी। जब वह मरा तब उसके बेटों में सब कुछ बाँट दिया गया। अंत में सिर्फ दो तस्वीर बची, दोनों तसवीरें एक जैसी थीं, मगर उनमें एक तस्वीर का फ्रेम लकड़ी का था और एक फ्रेम सोने का था, बड़े बेटें ने कहा सोने की तस्वीर मैं रख लेता हूँ पिताजी ने संभाल कर रखी है तो जरूर इसमें कुछ रहस्य होगा, तुम लकड़ी की तस्वीर ले लों छोटे बेटें ने लकड़ी की फ्रेम घर में लगाकर रखी। छोटा बेटा हर रोज उस तस्वीर को देखकर पिताजी को याद करता है हर वर्ष वह चित्र फीका होता जा रहा था , वह सोचने लगा कि यह तस्वीर फ़ीकी क्यों होती जा रही है।

एक दिन जब किसी परेशानी में बैठा था और सोच रहा था कि पिताजी ने उस तस्वीर में क्या राज छिपा रखा है? एक लकड़ी के फ्रेम वाली और दूसरी सोने के फ्रेम वाली तस्वीर क्यों बनाई और दोनों को इकट्ठा क्यों रखा था? कुछ तो राज होगा, उसने उस तस्वीर को खोल कर पीछे से देखा, उस तस्वीर के पीछे एक स्टिकर लगा हुआ था, शब्द तस्वीर में धीरे-धीरे प्रकट हो रहे थे, वे शब्द थे 'यह भी बदल जाएगा।' तब उसे एहसास हुआ कि इस वक्त जो मेरी परेशानी चल रही है शायद उसके लिए ही ये शब्द हैं कि "यह समय भी बदल जाएगा' यह रहस्य समझते ही वह शांत हो गया और कुछ ही दिनों में सब बदल गया,खुशियों के दिन जब आए तब भी उस बेटे को वे शब्द तस्वीर में दिखाई देते थे कि यह भी बदल जाएगा। इस तरह वह खुशी में बिना अधिक उत्तेजित हुए समता से जिया। इस तरह वह सुख और दु:ख दोनों में शांत रहा। सिर्फ कुछ शब्दों की वजह से वह सदा सजगता, सरलता, समानता और समता से जिया। जीवन का रहस्य भी थोड़े से शब्दों में समा जाता है, लेकिन उन थोड़े से शब्दों पर अमल करने से सारा जीवन बदलकर महाजीवन बन सकता है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, मगर लोग बदलना नहीं चाहते, बदलना शुरुआत में थोड़ा सा अजीब लगता, इसलिए वे सोचते हैं कि जैसा चल रहा है, चलने दें , मगर बहुत जल्द ही यह परिवर्तन आप में बड़ा बदलाव ला सकता है। आप आनेवाले अवसर के लिए पहले से ही जागृत हो जाए और सही समझ के साथ, सामान्य बुद्धि रखते हुए हर परिवर्तन का स्वागत करें, खुशियों में पहले बहुत जोश के साथ और बाद में सुस्त होकर कार्य न करें, मध्यम मार्ग में रहें।

ज़िंदगी में सकारात्मक सोच रखते हुए संभावना विचारक बनें। गुजरे हुए समय पर पछताएँ बिना यह देखें कि आनेवाला समय कैसा होगा। यह देखें कि हम उम्र से बड़े हो गए है तो भावनाओं से भी बड़े हो जाएँ। परिवर्तन से न घबराएँ 'यह भी बदल जाएगा मंत्र को हमेशा याद रखें, आनेवाले समय को एक नए तरीके के साथ, एक नए विश्वास और एहसास के साथ जीने की कोशिश करें, बदलाव शुरू में थोड़ा सा अटपटा अवश्य लगेगा, परंतु शीघ्र ही यह नया परिवर्तन आपके अंदर एक नया बदलाव लाएगा ।

भविष्य का रहस्य जानकर आप सुखी नहीं रह सकते वर्तमान का रहस्य जानना ही आनंद प्राप्त करने का मार्ग , क्योंकि वर्तमान का रहस्य अभी और यहीं है। वर्तमान का क्षण सत्य है , हम सभी को वर्तमान में रहना सीख लेना चाहिए वर्तमान में सही कर्म किया जा सकता है और वर्तमान से ही भविष्य बदला जा सकता है।

जीवन दृष्टि

श्रीमती सुनीता,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

महाभारत में वर्णित एक प्रसंग के अनुसार जब युद्ध चल रहा था तो सवाल उठा कि भीष्म पितामाह को कैसे पराजित किया जाए ? उन्हें तो इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त था। वे जब तक खुद न चाहे तब तक उन्हें कोई नहीं मार सकता था। इस लिए एक दिन उस समय की परंपरा के अनुसार जब युद्ध समाप्त हो गया और दोनों ओर की सेनाएँ अपने-अपने शिविरों में लौट गई तो पांडव-गण श्रीकृष्ण भगवान के साथ भीष्म पितामह के शिविर में गए और उन्हें नमस्कार कर पूरे सम्मान के साथ पूछा कि उन्हें पराजित करने का उपाय क्या हैं?

यहाँ यह महत्वपूर्ण नहीं है कि भीष्म विरोधी पक्ष से हैं बल्कि यह जरूरी हैं कि यदि युद्ध क्षेत्र में भी कोई विरोधी प्रतापी एवं ज्ञानवान व्यक्ति हैं तो भी उनसे सीख लेने में कोई बुराई नहीं हैं। दरअसल विद्या पर किसी एक का प्रभुत्व नहीं होता। अपितु वह समूची मानवता की पूंजी होती है। एक सच्चा ज्ञानी व्यक्ति शिक्षा या सीख देने में कोई पक्षपात नहीं करता। ऐसा व्यक्ति यह नहीं देखता कि ज्ञान प्राप्त करने वाला मित्र हैं या शत्रु, वह तो केवल योग्यपात्र ही चाहते हैं जो उनके जीवन के अनुभवों से सचमुच लाभ उठा सकें।

हमारे यहाँ आम चुनावों में राजनीतिक दल भी महाभारत के युद्ध के पक्षों की भांति कई खेमों में बंटे हुए हैं। ऐसे में जिन नौजवान नेताओं के हाथ में जीत का झंडा हैं, वे भी पुराने अनुभवी नेताओं, चाहे वे किसी भी दल से हैं, से बहुत कुछ सीख सकते हैं। युवा लोगों का जीवन उत्साह से तो भरा हैं लेकिन जीवन दृष्टि का अभी उनमें अभाव हैं। इसके विपरीत बुजुर्गों के पास वैसी ऊर्जा नहीं हैं लेकिन जीवन का अनुभव हैं। दोनों को साथ लाने के लिए जरूरी हैं कि युवा पीढ़ी को कम न समझा जाए और हर पुरानी पीढ़ी भी नई पीढ़ी को सींचने और आगे बढ़ाने को अपना कर्तव्य समझें।

स्वयं की ख़ोज

सुश्री नंदनी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

यह एक कहानी हैं या शायद सच्ची घटना कि एक व्यक्ति भीख माँगकर अपना गुजारा करता था। वर्षों से वे सड़क पर एक निश्चित जगह बैठकर भीख माँगता, लेकिन इससे न ही उसकी दशा बदली और न ही वेशभूषा। एक ही तरह से एक ही जगह बैठकर पता नहीं वह कितने वर्षों से भीख मांग रहा था। एक दिन उसकी मृत्यु हो गई कुछ भले लोगों ने उसके शव को उसी के बैठने के स्थान पर दफ़ना देने का फैसला किया। इसके लिए थोड़ी सी जमीन जैसे ही खोदी गई वहाँ बेशकीमती हीरे-जवाहरातों से भरा विशाल खजाना दबा मिला। हमारा जीवन उस भिखारी की तरह हैं जिसे नही पता कि भीतर कितना बड़ा खजाना छुपा हैं और हम बाहर हाथ फैलाए, अनेक लालसाएँ लिए घूम रहे हैं।

इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि संचार उपक्रम बनाकर, अन्तरिक्ष में उपग्रह भेजकर बड़ी बड़ी उपलब्धियों के बाद भी इंसान अपने ही भीतर छिपी विलक्षण क्षमताओं से बेखबर हैं। इंसान जन्म लेता हैं, अपने ढंग से जीता हैं, फिर हमेशा के लिए सो जाता हैं, उसे जीवन पर्यन्त अपने भीतर के शक्ति स्त्रोत का पता तक नहीं चलता। धर्मगुरू हमेशा सिखाते हैं कि अपने भीतर झाकों, स्वयं को जानो। मगर आम लोग यह समझ पाने में असफल रहते हैं कि अंतर्मुखी होना क्या हैं और ऐसा कैसे बना जाता हैं? अपने भीतर छिपी शक्ति के भंडार को जानना-समझना ही अंतर्मुखी होना हैं। अन्य व्यक्तियों की क्षमताएं बाहरी साधनों तक ही सीमित रहती हैं, जबकि अंतर्मुखी व्यक्ति की पहुँच इन सीमाओं से परे होती हैं।

हमारे रोज़मर्रा की जिंदगी उलझनों से भरी हैं जैसे ही हम एक समस्या का समाधान करते हैं दूसरी उठ खड़ी होती हैं। जब हमारी आमदनी थोड़ी बढ़ जाती हैं तो परिवार का कोई सदस्य बीमार पर जाता हैं। इस बीमारी के कारण हमारा बर्ताव दूसरों के साथ खराब हो जाता हैं। कुछ दिन बाद घर की छत टपकने लगती हैं, हमें उसकी मरम्मत करानी हैं। हम सोच में पड. जाते हैं कि कब हम इन सभी परेशानियों से मुक्त होंगे। पर यदि हम अपने आस-पास देखे तो पता चलेगा कि हर व्यक्ति ऐसे ही समस्या से घिरा हुआ हैं। ऐसे में अंतर्मुखी होना ही इन सभी समस्याओं से खुद को दूर कर लेने का एक मात्र उपाय हैं। लेकिन अंतर्मुखी होना तो दूर लोग आज धर्म का मतलब तक भूल चुके हैं।

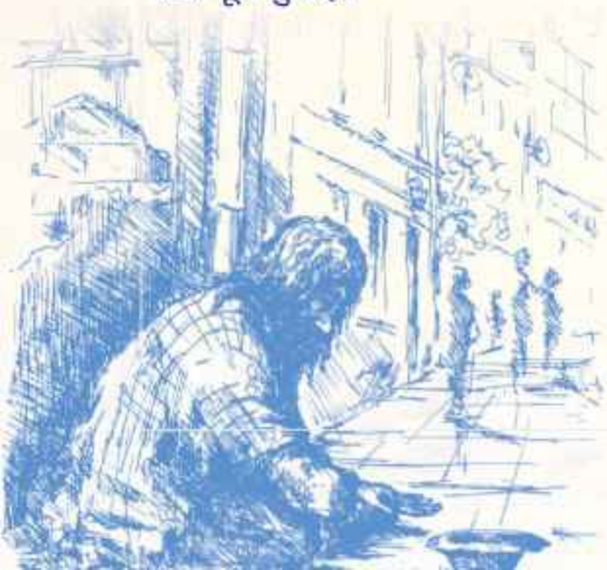

छोटी सी ज़िंदगी

सुश्री प्रेरणा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

छोटी सी ज़िंदगी, बड़े हैं हसरतों के महल,
ख़्वाब पूरे होने से पहले, सांसें न जाए ठहर,
बना रहें हैं सदियों से, सभी रेत का घर,
आँधियाँ न बिखेर दें, हैं इसी बात का डर।
अर्श से टकरा कर सदाएँ, आ जाती वापस,
दिल की भावना में, जाने कब होगा असर,
ज़िंदगी जैसे पतंग की डोर, कब कैसे कट जाए,
यह राज़ किसे हैं पता, इस बात की किसे हैं ख़बर,
बना रहें हैं सदियों से, सभी रेत का घर...
जो बिना लफ्ज़ों के समझ ले हाल-ए-दिल,
दिल ढूंढ रहा हैं कब से, वो साथी वो हमसफ़र,
सीरत का मुरीद जब से, बन गया हैं दिल मेरा,
चेहरे की खूबसूरती पर, टिकती नहीं अब नज़र,
बना रहें हैं सदियों से, सभी रेत का घर,
आँधियाँ न बिखेर दें, हैं इसी बात का डर।

सोशल मीडिया एक दो-धारी तलवार

हरीश कुमार,
स.ले.प.अ.

कहा जाता हैं कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, आपको कौन-सा दिखता हैं, यह आपके नज़रिये पर निर्भर करता हैं। ठीक इसी प्रकार सोशल मीडिया भी एक दो धारी तलवार हैं, अच्छी भी एवं बुरी भी, आपको कैसी लगती हैं, यह आपके नज़रिये पर भी निर्भर करता हैं।

सर्वप्रथम हमें यह समझने की आवश्यकता हैं कि असल में सोशल मीडिया हैं क्या? यह एक ऑनलाइन प्रक्रिया हैं जिसमें अभिव्यक्ता या उपयोगकर्ता, डिजिटल वेब तकनीक का प्रयोग करते हुए अपने संदेशों व अभिव्यक्ति का संचार प्रसार करता हैं। अभिव्यक्ति या संचार इंटरनेट के उपयोग से होना अनिवार्य हैं, चाहे माध्यम/प्लेटफॉर्म कोई भी हो। जैसे-ब्लॉगिंग (वर्डप्रेस), माइक्रोब्लोगिंग (ट्विटर,कू), सोशल नेटवर्किंग (फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम), मल्टीमीडिया (यू-ट्यूब) इत्यादि। इनके अलावा भी बेहद सारी साइट्स एवं एप्स भी सोशल मीडिया का माध्यम हैं ही।

यदि आप भारत जैसे 140 करोड़ की आबादी वाले देश की बात करें, तो मेरा ऐसा मानना हैं कि कम से कम आधी आबादी सोशल मीडिया का प्रयोग करती ही हैं। डिजिटल भारत में इंटरनेट के सस्ते होने से हर गाँव-कस्बें में भी सोशल मीडिया का प्रवेश हो चुका हैं। यदि आप लोगो से एक दफ़ा पूछ भी ले कि वह सोशल मीडिया का प्रयोग क्यूँ करते हैं, तो वह बेहिचक कह देंगे कि वह बातचीत करने, अपने विचारों व ज्ञान को सांझा करने एवं किसी मुददें विशेष पर अपनी राय रखने के लिए वे लोग सोशल मीडिया का प्रयोग करते हैं। इन बातों से मैं भी हामी भरता हूँ क्योंकि यह सत्य हैं कि इन्हीं कारणों की वजह से ही सोशल मीडिया का उद्गम भी हुआ हैं। हालांकि, मानव स्वभाव में ही अपमानजनक एवं अनैतिक प्रवृति भी होती हैं, फिर भी हम सोशल मीडिया का अपनी सुविधानुसार व अपने दृष्टिकोण के तहत उपयोग करते रहते हैं। कई बार तो इसका उपयोग कैसे किया जाना चाहिए, यह जानने में भी कोई रुचि नहीं रखते। जब तक यह हमें लाभान्वित करता हैं, हम दूसरों पर इसके प्रभाव की परवाह तक नहीं करते।

संविधान में प्राप्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (अर्थात बोलने की आज़ादी) का मौलिक अधिकार भी यह

सुनिश्चित करता हैं कि यह अधिकार बिना किसी दूसरे के अधिकारों को हानि पहुंचाए एक सीमा-मर्यादा के अंतर्गत कार्य करता हैं, अर्थात यह एक पूर्ण अधिकार नहीं हैं एवं इस पर भी अंकुश लगाए गए हैं। परंतु डिजिटल दुनिया में सोशल मीडिया के प्रयोग पर अंकुश लगाना बेहद ही कठिन कार्य हैं।

सोशल मीडिया के माध्यम से फ़ेक व गलत खबरों का प्रचार चलाया जाता हैं एवं नकली पहचान बना कर सांप्रदायिक एजेंडा चलाकर समाज में शांति भंग की जाती हैं। इसमें कुछ दोष हम लोगो का भी हैं क्योंकि हम सब भी बिना स्त्रोत की जांच-पड़ताल किए खबरों को आगे भेजते रहते हैं। गलत खबरों के कारण ही कई बार समाज में दंगे, आत्महत्याएँ, आपसी भिड़ंत इत्यादि चलती ही रहती हैं।

सोशल मीडिया छोटे बच्चों पर भी शारीरिक व मानसिक दोनों रूप से प्रभावित करती है। आजकल बचपन से ही छोटे बच्चों में मोबाइल, इंटरनेट व सोशल मीडिया की लत लग जाती हैं। दिखावे की प्रवृति ने सभी को वशीभूत कर रखा है। बाहर मैदान में जाकर खेलने के बजाय सभी घर बैठे सोशल मीडिया पर समय व्यतीत करते हैं। जिसकी वजह से हम सभी का वास्तविक संबंध खत्म होता जा रहा हैं। शारीरिक गतिविधियां कम होने से बच्चों के विकास में भी बाधाएँ आती है। किशोरावस्था में मोटापा एवं अधिक वज़न भी आजकल इसीलिए पाया जाता हैं।

संस्कृत भाषा में एक लोकोक्ति हैं कि 'अति सर्वत्र वर्जयते' जिसका अर्थ हैं जरूरत से अधिक कुछ करने का परिणाम हमेशा हानिकारक होता हैं। सोशल मीडिया वरदान हैं यदि हम इसका पूर्ण रूप से मर्यादा में रहकर उचित प्रयोग करें, परंतु सोशल मीडिया को वरदान से अभिशाप बनाना भी हम सभी के हाथ में ही हैं। सोशल मीडिया को हमारे जीवन में इतनी ही जगह देनी चाहिए कि हम इस पर नियंत्रण करें, इतना भी स्थान न दे कि यह हम पर नियंत्रण कर बैठे।

अंत में,निष्कर्ष के रूप में, मैं बस यही कहना चाहूँगा कि जीवन में हर एक वस्तु कि कीमत होती हैं और अगर किसी वस्तु की कीमत नहीं हैं तो वह कीमत छुपी हुई होती हैं। जरा गौर से देखिएगा की वह छुपी हुई कीमत कहीं आप स्वयं या आपका कीमती समय तो नहीं?

धन्यवाद।

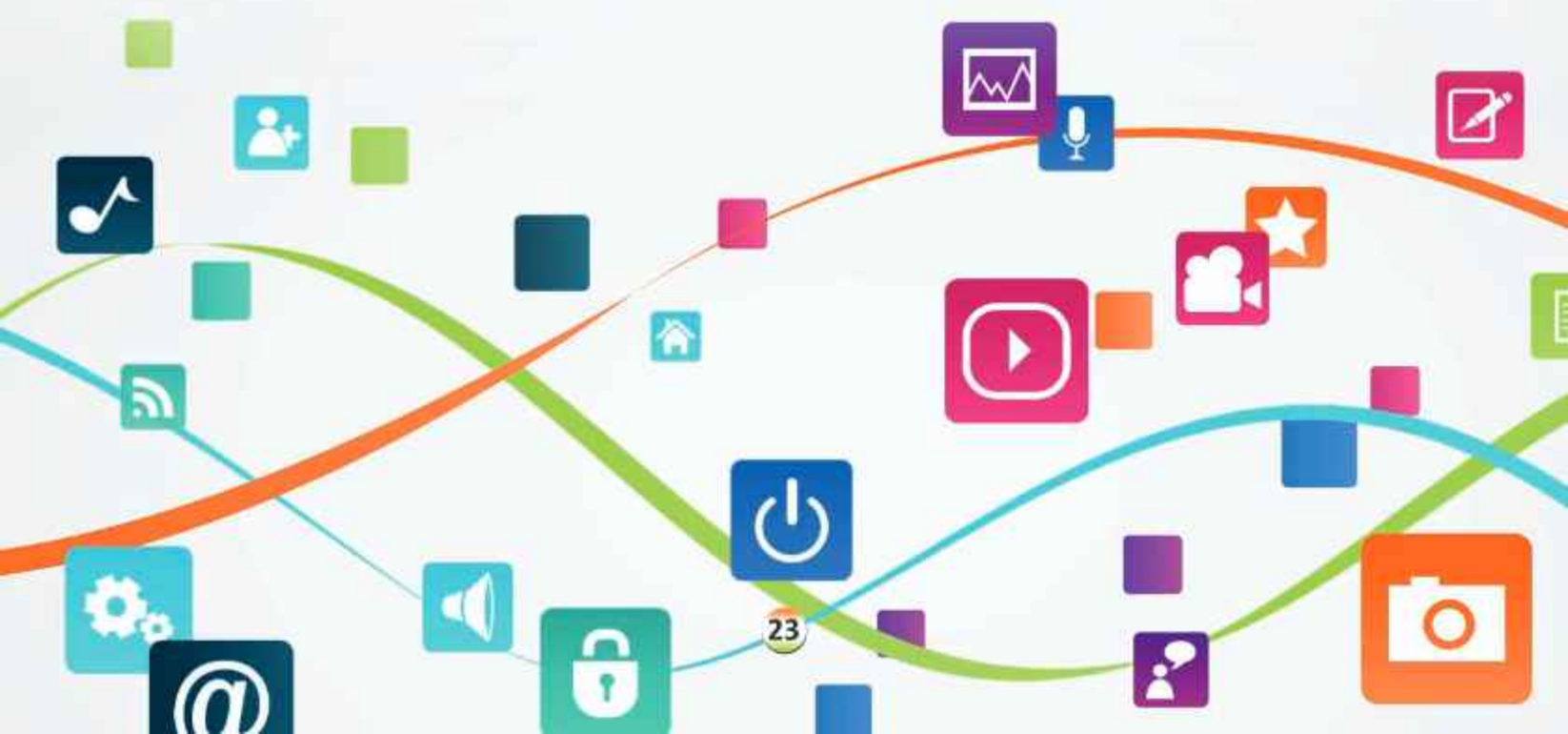

प्रेम से बढ़कर

श्रीमती सुनीता
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

बहुत सुना है कि प्रेम से दुनिया को जीता
जा सकता है, तो मन में एक सवाल आया,
कि क्या है कुछ ऐसा, जिसमें हो प्रेम भी समाया,
चेहरे पर मुस्कान के साथ कुछ दोस्तों का ख्याल आया,
मेरे लिए जो गम की रातों में तारे से हैं,
मेरे दोस्त सभी मुझे बड़े प्यारे से हैं,
वो, ना भी पूछे मेरा हाल,
उन्हें देखकर ही मेरा हाल सुधर जाता है,
जो बनती उनके संग अच्छी यादें,
मेरा सारा दु:ख तर जाता है।
उन्हें कहने समझाने को,
न कभी शब्दों की जरूरत पड़ती है,
मेरी खुशी या दुख को,
उनकी आँखें बिन कहे ही पढ़ती है।
आज कलम उन एहसासों के नाम,
जो जिंदगी के सफर के साथी है,
कुछ उम्र में बड़े, कुछ छोटे हैं,
कुछ सहकर्मी और कुछ सहपाठी हैं।
जिनके टिफिन का खाना खाकर,
कितनी माँओं के हाथ का स्वाद चखा है,
गर मेरे भाई ना पहुँच पाए तो मेरी राखी पर
खुद के भाई का हाथ रखा है।
जिनकी ससुराल विदाई में हमको भी रोना आया,
जिनकी बच्चों की किलकारी में खुद का बचपन पाया,
गर सगे साथ छोड़ दे तो भी वे साथ लिए हमें चलते हैं,
सच में ऐसे सच्चे दोस्त कितनी मुश्किल से मिलते हैं।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग मे कनिष्ठ अनुवादक के रुप में नियुक्ति पत्र प्राप्ति पर अपने साथियों के लिए संबोधन !!!!

विशेष त्रिपाठी,
कनिष्ठ अनुवादक

सुनों, सुनों, सुनों साथियों....
ट्रेन टिकट की करो तैयारी, आ गयी है खबर ये भारी,
ले लो कुछ नूतन परिधान, बांध लो अपने साजो सामान ।
मिल लो सभी भाई बंधुओं से, करलो प्रेम सभी स्वजनों से,
कुछ ही दिवस है अब बाकी, देखनी है सेवा काल की झाँकी।।

नित नवीन अनुभवों से सामना होगा, कुछ खट्टे मीठे पलों से आमना होगा,
रहना हर पल तुम तत्पर ऐसे, स्वयं को स्व तप से सींचा हो जैसे।
समस्याएँ आएँगी गर पथ मे थोड़ी, समाधान भी लाएँगी जोड़ी,
डिगना ना तुम कर्मवीरों पथ से अपने, करना ना विचलित तनिक भी सपने।
हृदय विजय करना व्यवहार से सबका, रखना समीप अच्छे लोगो का तबका।।

होंगे मित्रों के स्वजन अति प्रसन्न,जिनको मिलेगी गृह जनपद मे तैनाती,
मायूस होंगे उनके घर वाले, जिनको मिलेगी परदेश जाने की पाती।
किन्तु तनिक ना घबराना प्रिय तुम, अत्यंत भाग्यशाली योद्धा हो तुम,
अतुलित भारत भ्रमण का अवसर है, विभिन्नता अवलोकन का सुअवसर है।

प्यारे मात-पिता के गोदी से अब निकलो, सुअवसर है बाहर घूमो टहलो,
रहोगे जो निज प्रदेश से बाहर, अवकाश का आनंद लोगे तुम बेहतर।।

अद्भुत आनंद मिलेगा, मान लो मेरा कहना, सुनाया हूँ, जीवन अनुभव अपना।
यदि मेरा यह लघु काव्य प्रयास, स्पर्श किया हो आपके हृदयतल को,
आकांक्षा करता हु करबद्ध सबसे, सूचित करिए अपने ध्वनि करतल से।।

हिंदी भाषा व अंग्रेजी भाषा के मध्य प्रतिस्पर्धा

श्री गिरिराज
लेखापरीक्षक

विदेशी व्यापारियों जैसे पुर्तगाली, फ्रेंच तथा अंग्रेजों के आने के साथ ही अंग्रेजी भाषा का विकास शुरू हुआ, जैसे-जैसे अंग्रेजों की भारतीय साम्राज्य पर पकड़ मजबूत होती गई वैसे-वैसे अंग्रेजी भाषा ने भी मजबूती प्राप्त की।

अंग्रेजी भाषा के विकास व प्रचार-प्रसार के कई मुख्य कारण रहे हैं जैसे :

1. अंग्रेजों को अंग्रेजी भाषा के कर्मचारियो की आवश्यकता
2. ईसाई मिशनरीयों द्वारा अंग्रेजी भाषा में उपदेश
3. अंग्रेजों द्वारा भारतीय संस्कृति का पाश्चात्यकरण
4. मैकाले की नीतियाँ:- जैसे शिक्षा का निष्पंदन सिद्धांत
5. 1813 में अंग्रेजी शिक्षा हेतु 1 लाख रुपए सालाना खर्च करने का प्रावधान
6. राजा-महाराजा के बच्चों हेतु अंग्रेजों द्वारा अंग्रेजी विद्यालयों व कॉलेजों की स्थापना।

अत: हम कह सकते हैं कि अंग्रेजी भाषा के उदभव में अंग्रेजी नीतियाँ, प्रोत्साहन एवं हिंदी भाषा को तवज्जों न देना प्रमुख रहा।

• आजादी के बाद स्थिति •

स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान निर्माताओं ने भारत की राजभाषा के रूप में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी को मान्यता देकर वर्षों से हिंदी भाषा के साथ हो रहें दोहरे व्यवहार से मुक्ति दिलाई।

• भारत सरकार द्वारा हिंदी प्रोत्साहन हेतु किए जा रहे प्रयास •

स्वतंत्रता के बाद से भारत सरकार ने हिंदी भाषा हेतु कई प्रयास किए जा रहे हैं:- संविधान के नीति-निर्देशक तत्वों में जगह देना

1. अनुच्छेद 348 से लेकर 350 तक हिंदी भाषा के उत्थान हेतु राज्य एवं केंद्र सरकारों को निर्देश।
2. हिंदी राजभाषा विभाग की स्थापना।
3. हिंदी भाषा के प्रोत्साहन हेतु केंद्र एवं राज्य सरकारी कार्यालयों में हिंदी पखवाड़ा, विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं कार्यालयी कार्यों को हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहन देना।

4. गूगल पर हिंदी में भी सर्च इंजन की व्यवस्था करना।
5. भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा शब्दावली तथा अनुवाद की Website बनाना।
6. राज्य सरकार एवं केंद्र स्तर पर विभिन्न कार्यालयों को हिंदी भाषा के प्रोत्साहन हेतु पुरस्कृत करना, जैसे गुजरात लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पुरस्कृत।

अत: विदेशी आक्रांताओं एवं अंग्रेजों के द्वारा भारत के ऊपर शासन के कारण भारतीय संस्कृति के साथ-साथ हिंदी भाषा को भी नुकसान उठाना पड़ा था, जिसका खामियाजा हम आज भी हिंदी भाषा की उपेक्षा के रूप में उठा रहे हैं।

वर्तमान में युवा भी अंग्रेजी भाषा को परिस्थिति के रूप में ले रहे हैं। अत: हिंदी भाषा को वास्तविक पहचान तभी मिल पाएगी जब प्रत्येक भारतीय हिंदी भाषा को बोलने व लिखने को सामाजिक स्थिति के साथ देखेगा।

"हिंदी का करो सम्मान,
हिंदी पर करो अभिमान"

वास्तविक भारत

श्री अनुराग श्रीवास्तव
स.ले.प.अ.

अनभिज्ञ शहर के कष्टों से होकर सुदूर यह सजाता है,
यह सच है असली भारत तो, बस गांवों में ही बसता है।
वह दृश्य मनोरम प्रात: का, वह सूरज की स्वर्णिम किरणें,
वह कूज कोकिला के स्वर की, नूतन किलोल कराते झरने,

चौपायों का चारा खाना,कृषकों का खेतों में जाना,
स्वच्छंद उड़ान पंछियों की, मनचाहे स्वर गुनगुना,
ऊर्जा अपूर्व सी लिए हुए, वह खेत जोतना बैलों का,
हल की धारों से कट जाना, कुछ चट्टानों का शैलों का,
हर्षित कर देता है तन-मन,जहाँ कृत कर देता तार-तार,

चोटी सी नौका लिए हुए, जाना नदियों के आर-पार,
यह चित्र मनोहर गांवों का,जीवन खुल-खुल कर हँसता है,
यह सच है असली भारत तो, बस गांवों में ही बसता है।
यौवन कुछ सावन से पाकर, वह खुद पर इठलाती फसलें
कुछ गौ-माताएँ क्षीर शिन्धु,कुछ कामधेनु की भी नस्लें,

वह वृद्धों का जमघट लगाना, वह रात्रिहीन रातें उनकी,
छल, छदम, द्वेष से कहीं दूर वो ज्ञान भरी बातें उनकी,
वो आदर अपने लोगों का, वो ममता उन माताओं की,
वह प्रेम परस्पर लोगों में,न कुछ चिंता चिंताओं की,
वह सर्वधर्म संभव जहां, मानव-मानव में भेद नहीं,
यह तेरा यह मेरा है, ऐसा भी कुछ मतभेद नहीं,

हर एक व्यक्ति के सुख- दुख में,सब खुद को अर्पण किए हुए,
यदि हवा यहाँ पर बहती है, तो कुछ अपनापन लिए हुए,
हो मंत्र मुग्ध इन बातों पर, बादल भी यहाँ बरसता है,
यह सच है असली भारत तो, बस गांवों में ही बसता है।

आधुनिक सामाजिक मंच

श्री दीपक गुप्ता
स.ले.प.अ.

'सामाजिक मंच' जैसा अपने आप में ही परिभाषित प्रतीत होता है कोई ऐसा मंच जहाँ समाज के लोग एकत्रित होकर अपने विचार, अपनी जानकारी, अपनी संस्कृति को साझा करें, उसमें छिपी अच्छाईयों को लोगों तक पहुंचाएँ। प्राचीन भारत में सामाजिक मंचों की अहम भूमिका थी तब आज की तरह विभिन्न प्रचार-प्रसार के माध्यम नहीं थे, विभिन्न इंटरनेट मीडिया नहीं थे। तब गांवों में चौपाल होती थी, नुक्कड़ नाटक होते थे जिससे लोग सामाजिक जागरूकता फैलाते थे। परंतु आज के चमचमाते युग में जहाँ भोर होने से रात्रि तक पता ही नहीं चलता कब दिन हो गया कब रात,सभी लोगों का एक स्थान पर एकत्रित होना थोड़ा मुश्किल सा है इस नए युग में सामाजिक मंच का बदला हुआ स्वरूप हमें देखने को मिलता है।

इसे चाहे 'सोशल मीडिया' बोल दो,चाहे 'इंटरनेट ग्रुप' बोल दो। इन 'सोशल मीडिया' से दूर-दराज की जानकारी बहुत जल्दी, बहुत ज्यादा लोगों तक पहुँच जाती है। जैसे कोई आंदोलन हो कोई महिला उत्थान की बातें हो, कोई शोषण के खिलाफ आवाज हो कोई भ्रष्टाचार का पर्दाफाश हो तो कोई शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो इन सभी कार्यों में सामाजिक मंच (सोशल मीडिया) अहम भूमिका अदा कर रहा हैं। अभी कोरोना जैसी महामारी में जहाँ सभी लोग अपने घरों में बंद थे 'सोशल मीडिया' से लोगों ने अपने व्यापार, शिक्षा, तथा सूचनाओं का प्रचार प्रसार किया। हालांकि कई पहलुओं में सामाजिक मंच कुछ ज्यादा ही अपने पैर पसार चुका है और इसका प्रतिकूल प्रभाव विशेषकर युवा पीढ़ी एवं बच्चों पर ज्यादा देखने को मिला है। बच्चे अपनी पढ़ाई पर कम और 'सोशल मीडिया'

पर ज्यादा सक्रिय देखने को नजर आते हैं। आज की युवा पीढ़ी जो रोजगार उन्मुख होनी चाहिए थी 'सोशल मीडिया','वाट्सएप','इन्सटाग्राम','यूट्यूब' जैसे आधुनिक इंटरनेट के मंचों पर अपना समय, ऊर्जा, व ज्ञान व्यर्थ कर रही है।

'सोशल मीडिया' ने अपनी जड़े समाज के अंदर इतनी गहरी कर ली है जहाँ पड़ोसी को पड़ोसी से बात करने की फुर्सत नहीं है वही पड़ोसी इंटरनेट पर उसकी 'पिक्चर्स' लाइक कर रहा है।

एक तरह की आभासी दुनियाँ में आज के लोग जी रहे हैं। माता-पिता के साथ रहते नहीं पर 'सोशल मीडिया' पर एक दिन का मदर्स-डे, फादर-डे माना रहे हैं। महंगे व सुंदर होटलों में जाकर व्यंजनों का लुत्फ उठाने की बजाए व्यंजनों की 'पिक्चर्स' लेकर 'सोशल मीडिया' पर साझा कर रहे हैं क्या यही औचित्य है आज के आधुनिक सामाजिक मंचों का ?

हमें इस दौड़ती भागती जिंदगी में जहाँ 'सोशल मीडिया' इंटरनेट आदि चीजों की जरूरत है वहीं चाहिए कि हम अपना समय व ऊर्जा इन कार्यों में व्यर्थ ना करके एक सकारात्मक दिशा में इसे बढ़ावा दे। तभी आधुनिक सामाजिक मंच अपने सही अर्थों में सार्थक होगा और समाज का विकास होगा।

आधुनिक सामाजिक मंचों से पाश्चात्य संस्कृति का भी अपने भारतीय समाज में बढ़ावा देखने को मिलता है। भारत की संस्कृति को लोग फैलाने में शर्म महसूस करते हैं तथा पाश्चात्य संस्कृति का 'सोशल मीडिया' पर खुल कर प्रचार-प्रसार करते हैं

श्री दशरथ सिंह
स.ले.प.अ.

माँ

माँ, तू सुकून का दरिया है,
रगों में दौड़ते खून का जरिया है,
माँ, तू सुकून का दरिया है।
उँगलियों के जोड़ में जिंदगी की राह
अनपढ़ हाथों आसमान सी बरकत
सुखी काया में न धड़कने वाली ताकत
माँ तू निस्वार्थ प्रेम का उफनता सागर है,
प्यासे गले को मीठे पानी का गागर है।
तू अजर अमर सी हस्ती ,
तेरे आँचल बेफिक्र हर हस्ती,
तेरी मौजूदगी से है घर कि बस्ती,
तेरे सलीके से हर उलझन है हस्ती,
माँ, तेरा वंदन है,
तेरे कदमों की धूल मेरे माथे का चन्दन है।
ममता का लेप हर बला को बेअसर कर दे,
तू चाहे तो तपते सूरज को शीतल कर दे,
माँ, तेरी बंदगी है,
तेरे होने से ही मेरी जिंदगी है।
तेरे हाथ के खाने में अमृत है,
तेरी फटकार ही जीने की नसीहत है,
तेरे चरणों में सारे धाम है,
तेरी सेवा मेरा काम है
माँ, तेरे नाम से मेरी निशानी है,
तेरे सजदे में मैंने लिखी ये कहानी है।
मैं तो बस अंत में यही कहना चाहूँगा
" मंच चाहे आधुनिक हो, पर भाषा हैशटेग ना हो,
अगर भाषा हैशटेग भी हो तो, दिल हिन्दुस्तानी हो।"

बच्चियाँ अलविदा कहने आयी हैं

श्री सूरज कुमार दास
वरिष्ठ अनुवादक

पृष्ठभूमि- अक्सर ऐसी स्थिति गाहे-बगाहे देखने को मिल जाती ही जब जब बच्चियों की शिक्षा पर प्रतिबंध लगा हो। ये कविता बच्चियाँ अलविदा कहने आयी हैं कुछ उसी परिस्थिति पर आधारित है, जब ये बच्चियाँ आखिरी बार अपने विद्यालय को अलविदा कहने आयी हैं, और जाहिर तौर पर ये काफी मार्मिक दृश्य है। अंत में ये बच्चियाँ दक़ियानूसी सोच से ग्रसित समाज के लिए एक सवाल छोड़े जा रही है-

बच्चियाँ अलविदा कहने आयी हैं,
वैसे ये वक्त दाखिले का होता था।
इस बार अलविदा कहने आयी हैं,
बच्चियाँ अलविदा कहने आयी हैं।

एक बस्ता कंधे पर ढेर उसमें किताबें रखी,
ढेर उसमें किताब रखी, पर बोझ रत्तीभर नहीं।
सब बच्चियों के हाथों में एक-एक झोला और भी है,
हाथों में उसके सिरे को सबने कसा और भी है।
कि उसमें बंद दक़ियानूसी सोच जो है,
बच्चियों की आजादी पर बुर्का भारी बोझ जो है।

इस बार अलविदा कहने को आयी हैं,
बच्चियाँ अलविदा कहने आयी हैं।
बच्चियाँ अपनी किताबें वहीं रख जा रही हैं,
ताकि बने जगह कुछ बस्ते में और यादें ले जा रही हैं।

किसी ने वहाँ से चॉक के टुकड़े लिए हैं,
कोई मास्टर जी की छडी लिए जा रही है,
जिसको जो मिला वो उसमें यादें समेटे जा रही है।
इस बार अलविदा कहने आयी हैं,
बच्चियाँ अलविदा कहने आयी हैं

लाचार निगाहों से वो सब बदलते देख रही हैं,
जीवन भर के सपनों को वो पल में मरता देख रही हैं।
"सबसे बुरा होता हैं सपनों का मर जाना" कहकर बच्चियाँ लौट रही हैं,
"या सबसे बुरा होता है सपनों को मार दिया जाना? "सवाल छोड़े जा रही हैं।

बच्चियाँ अलविदा कहने आयी हैं,
वैसे ये वक्त दाखिले का होता था,
इस बार अलविदा कहने आयी हैं,
बच्चियाँ अलविदा कहने आयी हैं।

मेरी सेवा-निवृति

सालों की प्रवृति सरिता में,
आज ये कैसा मोड़ आया?
कार्यालय ने कहा मुझसे,
अब, निवृति का समय आया।
मान-सम्मान, पहचान व धन,
मैंने यहाँ सब कुछ पाया,
ना ही परेशान किया मुझे कभी किसी ने
बल्कि हरदम मुझको सहलाया।
एक बार घिरे बादल काले,
मेरे दिल ने तमाशा दिखलाया
ताली मार यम के हाथों में,
मैं तो यहाँ वापस आया।
सब साथी व अधिकारियों ने,
स्नेह और सहकार दिया
मेरी हर तकलीफ को सभी ने,
अपना जानकर अपनाया।
कभी नहीं भूलूँगा यह दफ्तर,
ये कुर्सी और टेबल अपना,
ये आँगन, ये उपवन और,
साथी-संगी का हमसाया।
मुश्किल है जा पाना यहाँ से,
पर कौन सदा है रुक पाया,
गुलदस्ता इन सब यादों का,
खाली मन को भर पाया।

श्री वी.डी.पंडया
पर्यवेक्षक

मानव धर्म

श्रीमती सुनीता
कनिष्ठ अनुवादक

मानव धर्म सभी के एक समान होने का नाम है। अक्सर ऐसा देखा जाता हैं कि श्रीमदभगवद् गीता के किसी संदेश की व्याख्या कुरान और बाइबल में मिलती हैं तो कभी वेद के किसी सूत्र का सार किसी फ़कीर द्वारा बताया जाता हैं और कभी बुद्ध के वचनों को कबीर के दोहों में समझा जाता हैं। वास्तव में सृष्टि की रचना के समय धरती पर तो कोई सीमा रेखा नहीं थी परंतु आज एक ऐसी पहचान हर किसी के लिए अनिवार्य कर दी गई हैं जो सदैव नहीं रहने वाली- राष्ट्र, संप्रदाय और रंग की पहचान। सीरिया जैसे देशों में जहां राष्ट्र, सत्ता एवं जनता के नाम पर कुछ बचा नहीं हैं, वहाँ के लोगों की पहचान का एक ही आधार बचा हैं-मानवता का आधार।

सआदत हसन मंटो की एक कहानी में सन 1947 के बाद हुए बँटवारे का जिक्र हैं। कहानी में कल्पना की गई हैं कि दोनों देशों की सरहद पर एक पागलखाना हैं जिसे लेने के लिए कोई देश तैयार नहीं हैं। इस समस्या को सुलझाने को एक कमीशन बनाया गया था। लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। तो यह निर्णय लिया गया कि क्यों ना पागलों से ही पूछ लिया जाए कि क्या किया जाए? पागलों से पूछा गया कि तुम कहाँ जाना चाहते हो- हिंदुस्तान या पाकिस्तान? पागलों ने जवाब दिया,"हम कहीं नहीं जाना चाहते। हम जहां हैं खुश हैं। "अधिकारियों ने फिर कहा," ठीक हैं। यहीं रहना लेकिन अगर जाने का अवसर मिले तो किसे चुनोगे? पागल हैरानी से एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे," जब रहना यही हैं तो पुछ क्यों रहे हैं?"

कहानी के अंत के मुताबिक उसी पगलखाने में एक दीवार खड़ी कर दी गई, एक हिस्सा पाकिस्तान को गया, एक हिंदुस्तान को। इसके बाद वे पागल उस दीवार पर चढ़ कर एक-दूसरे को कहते कि देखो! बाहर की दुनियाँ का करिश्मा, बिना कहीं गए तुम पाकिस्तानी हो गए और हम हिंदुस्तानी। सार यह हैं कि मनुष्य ने धरती पर लकीरें खींच दी और लोगों के जीवन जीने का तरीका बदल गया। प्रकृति ने भी धरती को अपने तरीके से पहाड़ों, फूलों, दरियाओं, मरुधरा से सजाया, लेकिन उसी संसार को मनुष्य अपने संसारिक व्यवहार में उलझ कर एक-दूसरे की मानवीय संवेदनाओं को आघात पहुँचा कर घृणा और संवेदनहीनता से भर रहा हैं।

नौकरी का सफर

सुश्री नंदनी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सोचा था जब नौकरी होगी, जिंदगी आसान हो जाएगी,
हर चीज अपने हिसाब हो जाएगी,
परिवार में होगा मान, समाज में बढ़ेगा सम्मान,
दुनिया की हर मुश्किल आम हो जाएगी,
माता-पिता का होगा नाम, खुशी से होगा उनको मुझ पर अभिमान।
पर जब नौकरी लगी तो ये जाना हैं
कितना मुश्किल होता नौकरी के बाद का फ़साना हैं,
अपना घर(राज्य) छोड़ कहीं और जाना पड़ता हैं,
हर मुश्किल को खुशियों से छुपाना पड़ता हैं।
अब जब मुझे कोलकाता से राजकोट आना पड़ा हैं,
परिवार की खुशियों और उनकी बागडोर को संभालना पड़ा हैं,
अब न कोई कमी हैं और न ही कोई गम,
यही मेरी जिंदगी का बेरोजगारी से रोजगारी तक का सफर।

मैं तो बाप हूँ

श्री राज कुमार मान
स.ले.प.अ.

मेरे कंधे पर बैठा मेरा बेटा
जब मेरे कंधे पे खड़ा हो गया,
मुझी से कहने लगा
देखो पापा! मैं तुमसे बड़ा हो गया।
मैंने कहा, बेटा इस खूबसूरत
गलतफ़हमी में भले ही जकड़े रहना,
मगर मेरा हाथ पकड़े रखना।
जिस दिन ये हाथ छूट जाएगा,
तेरा रंगीन सपना भी टूट जाएगा।
दुनिया वास्तव में उतनी हसीन नहीं हैं,
देख तेरे पांव तले अभी जमीन नहीं हैं।
मैं तो बाप हूँ बेटा, बहुत खुश हो जाऊँगा ,
जिस दिन तू वास्तव में मुझसे बड़ा हो जाएगा।
मगर बेटे कंधे पे नहीं...जब तू जमीन पे खड़ा हो जाएगा,
ये बाप तुझे अपना सब कुछ दे जाएगा,
और तेरे कंधे पर दुनिया से चला जाएगा।

प्रेरक प्रसंग

सुश्री नंदनी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

चार दीपक आपस में बात कर रहे थे।

पहला दीपक बोला "मैं हमेशा बड़ा बनना चाहता था, सुंदर और आकर्षक घड़ा बनना चाहता था, पर क्या करूँ जरा सा दीपक बन गया?"

दूसरा दीपक बोला "मैं भी अच्छी भव्य मूर्ति बनकर किसी अमीर आदमी के घर की शोभा बढ़ाना चाहता था, पर क्या करूँ कुम्हार ने मुझे छोटा सा दीपक बना दिया।"

तीसरा दीपक बोला "मुझे बचपन से ही पैसों से प्यार हैं, काश मैं गुल्लक बनता तो हमेशा पैसों से भरा रहता,पर मेरी किस्मत में ही दीपक बनना लिखा था।"

चौथा दीपक खामोश रहकर उनकी बातें सुन रहा था। अपनी-अपनी प्रतिक्रिया देने के बाद तीनों दीपों ने चौथे दीपक से भी अपनी जिंदगी के बारे में कुछ कहने को कहा।

चौथे दीपक ने कहा-भाइयों! कुम्हार जब मुझे बना रहा था तो मैं बहुत खुश हो रहा था। क्योंकि वह मुझे बनाते वक्त प्रसन्न था, उसने जब मुझे बनाया तो मैं अपने जीवन के प्रति कृतज्ञ हो गया कि मैं एक बिखरी हुई मिट्टी से एक सुंदर दीपक बन गया जो अंधेरे को दूर करने का साहस रखता हैं।

मैं वह साहसी दीपक हूँ जिसके जलते ही अंधेरा छू मंतर हो जाता हैं। मैं आभारी हूँ उस कुम्हार का जिसने मुझे ऐसा रूप दिया कि मुझे भगवान के सामने मंदिरों में प्रज़्जवलित किया जाता हैं। मेरी रोशनी में पढ़कर न जाने कितने होनहार बच्चे आज बड़े-बड़े आफिसर बन गए हैं और देश की सेवा कर रहे हैं। मेरा प्रकाश सिर्फ अंधेरे को ही दूर नही करता बल्कि एक नई उम्मीद और नई ऊर्जा का संचार करता हैं।

चौथे दीपक की बातें सुनकर अन्य तीनों दीपों को भी अपने जीवन का महत्व समझ में आ गया। अक्सर इंसान को जो मिलता हैं या जो मिला हैं, उससे संतुष्ट नहीं होते और उन तीनों दीपकों की तरह अपने कुम्हार यानि ईश्वर से शिकायत करते रहते हैं, लेकिन यदि हम ध्यान दे तो हमारा जीवन अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण हैं और हम जो हैं उसी रूप में इस जीवन को सार्थक बना सकते हैं। इसलिए, चौथे दीपक की तरह हमें भी जो हैं उसमें संतुष्ट होकर अपना सर्वश्रेष्ठ जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

अभ्यास: जीवन के मूल मंत्र

सुश्री प्रेरणा
लेखापरीक्षक

एक गड़ेरिया था जो रोज दूर जंगल में अपनी भेड़े चराने जाता था। एक बार उसकी भेड़ ने एक मेमने को जन्म दिया और चल बसी। मेमना बेचारा असहाय हो गया। उसकी इस अवस्था पर गड़ेरिये को बहुत अफसोस हुआ। वह उसकी खुद देखभाल करता और उसे कोई दुख न होने देता। धीरे-धीरे उसे मेमने से लगाव हो गया। मेमना था भी बहुत सुंदर। गड़ेरिया जब जंगल में अपनी भेड़े चराने जाता तो अपने प्रिय मेमने को कंधे पर उठा लेता ताकि उसे कोई कष्ट न हो। समय गुजरता गया, मेमना धीरे-धीरे बड़ा होता गया। गड़ेरिया उसके खान-पान का बड़ा ध्यान रखता था, पूरी तरह से भेड़ बन चुका था। लेकिन गड़ेरिया अब भी उसे अपने कंधे पर उठाए फिरता था।

एक बार एक अजनबी ने गड़ेरियेँ को उस भेड़ को कंधे पर उठाया देखा तो आश्चर्य से पूछा-"तुम इतनी बड़ी और भारी भेड़ को अपने कंधे पर कैसे उठा लेते हो?" गड़ेरियेँ ने जवाब दिया-"यह भारी कहां हैं? बिल्कुल भी भारी नहीं हैं। इसे तो मैं इसके बचपन से ही अपने कंधे पर उठाता आ रहा हूं।"

असल में जिस व्यक्ति,वस्तु अथवा प्राणी को हम मन से चाहते हैं,जिसे प्यार करते हैं, वह हमें बोझ नहीं लगता। इसके अलावा,जब हम कोई काम बार-बार करते अथवा दोहराते हैं,तो वह काम न केवल हमारे लिए सरल हो जाता हैं, बल्कि हमारी कार्य करने की क्षमता में भी वृद्धि होने लगती हैं।

इसलिए यदि किसी कार्य में विशेष दक्षता अथवा प्रवीणता हासिल करनी है तो उसे आरंभ से ही सीखना शुरू कर देना चाहिए। किसी नए विषय को सीखने अथवा किसी कार्य विशेष में दक्षता हासिल करने के लिए यह पद्धति अपनाई जा सकती हैं। किसी भी क्षेत्र में सफलता पाने के लिए नियमित अभ्यास जरूरी होता है। अभ्यास के साथ-साथ कार्य में लगने वाली शक्ति में भी वृद्धि होनी चाहिए। साथ ही साथ अभ्यास के समय में भी क्रमश: वृद्धि हो तो और अच्छा होगा। किसी भारोत्तोलक को देखकर लगता है कि वह बहुत ताकतवर है, इसीलिए इतना ज्यादा वजन उठा लेता हैं, लेकिन अधिक वजन उठा पाने का कारण उसका निरंतर अभ्यास है। वह पहले कम वजन उठाने से अभ्यास शुरू करता है। वह रोज उठाए जाने वाले वजन की मात्र में बढ़ोतरी करता जाता है और साथ ही आवृति में भी।

"करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात के,सिल पर परत निशान।।"

"चिंताओं से दूर रहें"

श्री एन. बी. वाजा
व. लेखापरिक्षा अधिकारी

चिंता से रूप चतुराई घटे,
घटे रूप,गुण और ज्ञान;
चिंता बड़ी अभागिनि,
चिंता चिता समान।

हम अच्छी तरह जानते हैं कि चिंता जीवन के लिए बेहद हानिकारक है। हम अक्सर 'चिंता चिता समान' कहावत का भी उच्चारण करते हैं। फिर भी बातचीत में चिंता करने की आदत नहीं जाती है। चिंता के परिणाम स्वरूप हम दिन-ब-दिन जीवन में रुचि खो देते हैं। उदासीनता हमें घेर लेती है और कोई भी काम समय पर नहीं हो सकता।

लेकिन यह समझना जरूरी है कि चिंता काफी हद तक काल्पनिक होती है। जो घटना नहीं हुई वह घटित होगी, यह मानकर हम जीवन को नाहक जला देते हैं। चिंता विकार विरासत में नहीं मिलता है। मनुष्य स्वयं चिंता को जन्म देता है। इस का जन्म अशुभ होने के भय से होता है। यह भय कई मामलों में भय ही रह जाता है, वास्तव में कुछ नहीं होता।

हर इंसान किसी न किसी बात की चिंता करता रहता है। लेकिन यह कितना उचित है, एक मनोवैज्ञानिक ने विश्लेषण किया है जो कि इस प्रकार है:

(1) उन चीजों के बारे में चिंता जो वास्तव में नहीं हुई हैं लेकिन भविष्य में होने की चिंता 40%

(2) अपरिहार्य अतीत की घटनाओं के बारे में चिंता 30%

(3) बिना किसी कारण के हमारे स्वास्थ्य के बारे में चिंता 12%

(4) कम महत्त्व के मामलो में चिंता 10%

उपरोक्त विश्लेषण से यह देखा जा सकता है कि जिन चिंताओं को वास्तव में करने की आवश्यकता है वे सब से कम हैं – केवल 8%, जब कि सबसे अधिक, यानी 92%, हम अनावश्यक चिंताओं से दुखी हैं।

अत्यधिक चिंता से पेशीय विकार हो सकते हैं। कुछ मामलों में चिंतित मनुष्य भी मानसिक रोगो का शिकार हो जाता है।

चिंता शरीर की कांति को फीका कर देती है। सिरदर्द, थकान और अपच एक दैनिक घटना बन जाती है। नतीजतन, शरीर दिन-ब-दिन खराब और रोग से ग्रसित होता जाता है। एक पल के लिए मान लें कि आपने जिन कठिनाइयों की कल्पना की है, वे वास्तव में आएंगी, लेकिन यह चिंता करने योग्य नहीं है, क्योंकि चिंता करना समस्याओं को खत्म करनेके बजाय और अधिक भ्रमित करता है। इसे दूर करने के लिए, उत्पन्न होनेवाली समस्याओं पर विचार करना चाहिए। इससे चिंता से निकलने का रास्ता मिलता है।

चिंता से मुक्त होने का सबसे आसान तरीका है ईश्वर में विश्वास रखना और हमेशा खुशी से जीना। ईश्वर में आस्था रखने वालों को चिंता कम होती है। 'परमेश्वर। वह जो कुछ भी करेगा, भले के लिए करेगा।' खुशी चिंता का कट्टर दुश्मन है, जो खुश है उसके पास वो कभी नहीं जाती है। अतीत को भूल जाओ, वर्तमान को देखो और भविष्य के बारे में आशावादी रहो।

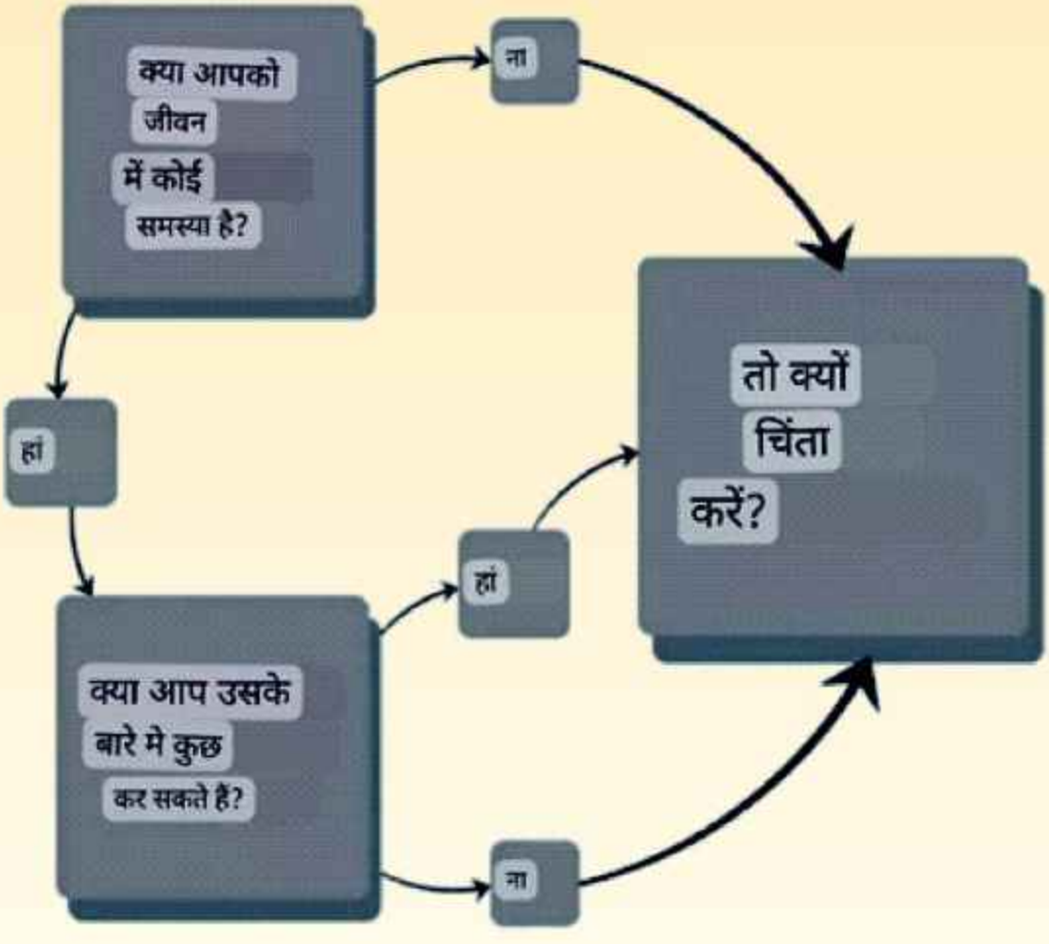

नारी की गाथा

श्रीमती प्रिंसी अग्रवाल
आशुलिपिक

सोचा आज कुछ लिखू स्त्री के सम्मान में।
कलम उठाई तो शब्द ने कहा इतना भार नहीं मुझमे
कि कह सकूँ कुछ नारी के आभार में।
जान हथेली पर रखकर इसने संसार बढ़ाया हैं
फिर भी हर पल हिस्से इसके बस तिरस्कार ही आया है।
पैदा होने से पहले ही ये न जाने कितनी दुआओं में रोकी जाती हैं।
हे भगवान! मुझको घर का चिराग ही देना।
गलती से भी लड़की हो मुझको ये अभिशाप न देना।
लड़की हो तुमसे नहीं हो पाएगा कहकर हर कदम पर टोकी जाती हैं।
जिस घर में जन्मी उस घर के लिए ये बचपन से ही पराई है।
जिसके लिए कर दी ज़िंदगी न्योछावर ये इस घर को भी कहा भायी हैं।
घर में इनको राम की चिंता, बाहर हर पल रावण का डर।
सीता हो या साधारण नारी इन्हे चैन मिला न जीवन भर।
बंद करो ये अधिकारों का तमाशा, परवाह के नाम पर हो टोकते,
समझो कभी स्त्री के मन की भाषा ।
मैं न अबला, न बेचारी न ज़िंदगी से हारी हूँ।।
मैं सीता हूँ, मैं दुर्गा हूँ, मैं बस तुमसे थोड़े सम्मान की मारी हूँ।

माँ

श्री गिरीश उनागर
वरि. लेखापरीक्षक

जब अकेला रहा तो उसकी याद आई
अंधेरे में था तो उसकी याद आई,
जब भूख लगी तो उसकी याद आई
नींद नहीं आई तो उसकी याद आई,
सोचने में कितनी आसान लगती थी ये जिंदगी
जब खुद से जीना सीखा तो उसकी याद आई,
तभी लगा माँ कि माँ इतनी मतलबी कैसे हो सकती है,
हमसे भी ज्यादा हमारे लिए कैसे सोच सकती है।
सच तो ये है कि वो माँ ही होती है,
जो हमारा पेट भरकर खुद भूखी रहती है।

ज़िंदगी का सफर

अमित राज वर्मा
स.ले.प.अ.

सब वक्त-वक्त की बात है। पतझड़ में जब पुरानी पत्तियाँ पीली होकर मुरझाने लगती है तो खुद ही नीचे आ जाती है और मुझे ये कभी अच्छा नहीं लगा। मेरे घर के सामने एक नीम का पेड़ हुआ करता था। बहुत विशाल घनी छाँव वाला। बसंत में उसके विशालकाय आकार से घर के आँगन में घनी छाँव द्वारा मौसम गुलजार रहता था।

खैर मेरा बचपन उसी पेड़ की छाँव में खेलते हुए बिता, इसलिए कुछ ज्यादा ही लगाव था। एक बार पतझड़ में उस पेड़ के सारे पत्ते गिर गए। पेड़ ठूंठ सा दिखने लगा। मैं यह देखकर काफी उदास था। पिताजी मेरी उलझन समझ गए। उन्होंने मुझे बड़े प्यार से समझाया। बेटा, दरअसल ये पेड़ अपनी सूखी पत्तियों को खुद ही गिरा देता है ताकि नई पत्तियाँ आ सके और ये पेड़ फिर से हरा-भरा हो जाए। तुम देखों यदि पुरानी पीली पत्तियाँ नहीं गिरती तो फिर न ही तो उसमें फूल आते और न ही नई पत्तियाँ और फल। सब प्रकृति का विद्यान है, जिसे ईश्वर ने बनाया है। एक महीने के भीतर ही नई पत्तियों संग पेड़ फिर से झूम उठा। अब उस पेड़ पर तोता, तीतर, कोयल आदि पंछियों ने वापस अपना ठिकाना बना लिया और वातावरण फिर से चहचहा उठा।

पर पिताजी की वो बात आज भी जीवन में प्रासांगिक है, स्कूल छूटा कॉलेज पहुंचा स्कूल के दोस्त पीछे छूट गए। नए माहौल में नए दोस्त बने। जिंदगी आगे बढ़ी B.Tech में पढ़ाई की तो कुछ कॉलेज के दोस्त फिर पीछे रह गए और नए साथी फिर जुड़े। इसी दौरान प्रतियोगिक परीक्षा की तैयारी के बाद मेरा चयन हो गया और मेरी तैनाती राजकोट में हो गई और एक बार फिर पुराने साथी पीछे छूट गए। फिर एक नया अध्याय जुड़ गया बरबसचलता गया और अभी भी कुछ छूटता जा रहा है। कुछ मिलता जा रहा है। अब फिर से जीवन के उस मोड़ पर हूँ जहां से फिर एक नया अध्याय शुरू करना है।

पिताजी की वो बात आज भी प्रेरणादायी है, जीवन में जब कुछ छूटता है तो वो एक जरियाँ कुछ नया पाने का, और यही जीवन का आनंद है।

ज़िंदगी

श्री गिरीश उनागर
वरि.लेखापरीक्षक

दो पल की जिंदगी है।
आज बचपन कल जवानी,
परसों बुढ़ापा, फिर खत्म कहानी।
चलों हंसकर जिए, चलो खुलकर जिए,
फिर न आने वाली यह रात सुहानी,
फिर न आने वाला यह दिन सुहाना।
कल जो बीत गया सो बीत गया,
क्यों करते हो आने वाले वक्त की चिंता,
आज और अभी जियों, दूसरा वक्त हो न हो

अंतहीन अंत

श्री गिरीराज
वरि.लेखापरीक्षक

उदासीनता का अंत ही है जागरूकता
असफलताओं का अंत ही है सफलता ॥
अकर्मणता का अंत ही है कर्म।
निर्मलता का अंत ही है मर्म॥
निर्लजता का अंत ही है शर्म।
अनैतिकता का अंत ही है धर्म॥
क्योंकि उष्णता का अंत ही है शीतलता।
अत: असफलताओं का अंत ही है सफलता ॥
पापों का अंत ही है पूण्य।
धरा का अंत ही है शून्य॥
निष्ठुरता का अंत ही है कारुण्य।
ऊसर का अंत ही है अरण्य ॥
क्योंकि मलिनता का अंत ही है पवित्रता।
असफलताओं का अंत ही है सफलता ॥
तृष्णाओं का अंत ही है तृप्ति।
बंधनों का अंत ही है मुक्ति
उत्कंठाओं का अंत ही है अनासक्ति॥
सुषुप्ति का अंत ही है जागृति
क्योंकि निर्दयता का अंत ही है सदयता॥
असफलताओं का अंत ही है सफलता ॥

"गर" होता वो मेरा

प्रशांत शर्मा
लेखापरीक्षक

"गर" होता वो मेरा, तो शिकायत न थी॥
उसे तो मुझ पर "इनायत" न थी॥
"गर"होता वो मेरा तो शिकायत न थी॥.
वादा सुना जब उम्र भर साथ रहने का॥
तो लगा कि "साँझ" के "सूरज" को "समंदर" मिल गया हो॥
वादा सुना जब हर वक्त साथ चलने का॥
तो लगा कि सूने पड़े "राह" को "मुसाफिर" मिल गया हो॥
वादा सुना जब हर "पल" साथ बिताने का॥
तो लगा कि "वक्त" को कुछ और वक्त मिल गया हो॥
वादा सुना जब "चाँद-तारे" देखने का ।
तो लगा कि टूटते "तारे" सा "ख्वाब" मुकम्मल हो गया हो॥
यूं हो जाओंगे "गैर", ये "हिदायत" भी न थी॥
उसे तो मुझ पर "इनायत" न थी ॥
"गर" होता वो मेरा, तो शिकायत न थी॥

प्रतिवेदन: टीजीएस के तहत ईएलएफए के लिए प्रशिक्षण

(दिनाँक: 07 एवं 08 अगस्त 2023)

स्थल: सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभ विद्यानगर आनंद

दिनांक 07 और 08 अगस्त, 2023 को सरदार पटेल विश्विद्यालय, वल्लभ विद्यानगर आनंद में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें हमारे संकाय ने परीक्षक स्थानीय निधि खाता, गुजरात के 41 अधिकारियों (श्रेणी प्रथम तथा द्वितीय) को उपयोगी विषयों पर प्रशिक्षण दिया।

: जैसे :

- स्थानीय निकाय लेखा परीक्षा में गंभीर अनियमितताओ का कारण केस स्टडी के साथ। (संकाय: श्री एन.बी. वाजा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)
- मूलभूत लेखापरीक्षा योजना की अवधारणाएँ (ऑडिट यूनिवर्स, रिस्क असेस्मेंट, प्लानिंग प्रोसेस और उदाहरण सहित) (संकाय:श्री ए. के. साहू, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)
- उदाहरण सहित मूलभूत लेखापरीक्षा योजना(ऑडिट यूनिवर्स, रिस्क असेस्मेंट, प्लानिंग प्रोसेस)की अवधारणाएँ
- निष्पादन लेखापरीक्षा: बुनियादी समझ, मामले के अध्ययन सहितऑडिट डिजाइन मैट्रिक्स की तैयारी तथा विषयों के चयन (संकाय: श्री गौतम कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)
- मामले के अध्ययन सहित निष्पादन लेखापरीक्षा में नमूने का चयन (संकाय: श्री ए. के. साहू, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)

प्रशिक्षण कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ

आमंत्रित गणमान्य व्यक्तियों के साथ सभी प्रतिभागियों और संकाय सदस्यों की समूह तस्वीर - (07 अगस्त, 2023)

प्रशिक्षण का उद्घाटन (दिनांक 07 अगस्त 2023) : श्री एम.पी.पुजारा, परीक्षक, स्थानीय निधि लेखा, सुश्री कल्पना ए. सामंत, उपमहालेखाकार,कार्यालय प्रधान महालेखाकार, राजकोट,डॉ. के. बी. कथीरिया, उप कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय आनंद और डॉ. निरंजन पटेल, उप कुलपति, सरदार पटेल विश्वविद्यालय (बाएँ से दाएँ)।

संबन्धित विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए श्री ए.के.साहू, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी और श्री गौतम कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी।

प्रशिक्षण सत्र में भाग लेते हुए, कार्यालय परीक्षक स्थानीय निधि लेखा गुजरात के प्रतिभागी।प्रशिक्षण सौहार्दपूर्ण वातावरण में आयोजित किया गया और सभी 41 प्रतिभागियों ने स्थानीय निकाय लेखा परीक्षा को भविष्य में और मजबूत बनाने के लिए मिलकर काम करने की दृष्टि से उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रशिक्षण का समापन श्री एम.पी. पुजारा, परीक्षक, स्थानीय निधि लेखा, श्री भाईलाल पटेल, कुल सचिव,सरदार पटेल विश्वविद्यालय और श्री एम के पटेल, संयुक्त परीक्षक,स्थानीय निधि लेखा को धन्यवाद ज्ञापन तथा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और संकायों को प्रतिभागियों की छायाचित्रवितरण के साथ किया गया।

प्रतिभागियों को
प्रमाण पत्र वितरित करते हुए
(दिनांक 08 अगस्त 23)

परीक्षक, स्थानीय निधि लेखाद्वारा संकायों
को समूह छायाचित्र प्रदान करते हुए
(दिनांक 08 अगस्त 23)

इसके अलावा प्रशिक्षण पूरा होने के पश्चात सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण पर फीडबैक देने हेतु प्रतिपुष्टि फार्म का परिचालन किया गया। प्रतिभागियों द्वारा दी गई समग्र प्रतिपुष्टि समीक्षा उत्तम रही।

वरी. लेखापरीक्षा अधिकारी /टीजीएस (कक्ष)

ऑडिट जागरूकता दिवस के दौरान कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा-I तथा कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), राजकोट के प्रधान महालेखाकार महोदय, उप-महालेखाकार महोदया तथा वरिष्ठ लेखाकार।

ऑडिट जागरूकता सप्ताह की कुछ झलकियाँ

ऑडिट जागरूकता सप्ताह के दौरान (लेखा व हकदारी) तथा (लेखापरीक्षा-I) कार्यालय के प्रधान महालेखाकार महोदय तथा कार्यालय के अधिकारी/ कर्मचारी

ऑडिट जागरूकता सप्ताह के समापन के अवसर पर श्री डी.आर.पाटील, प्रधान महालेखाकार (ले.प.-I), प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.), उप-महालेखाकार (ले.व.ह.,) उप-महालेखाकार (ले.प.-I), महोदय दीप प्रज्वलन करते हुए

ऑडिट जागरूकता सप्ताह के समापन कार्यालय के खिलाड़ियों के साथ श्री डी. आर. पाटील,प्रधान महालेखाकार (ले.प.-I), प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.), उप-महालेखाकार (ले.व.ह.) उपमहालेखाकार (ले.प.-I)

ऑडिट जागरूकता सप्ताह के समापन पर कार्यालय के कार्मिकों द्वारा गुजराती लोक नृत्य

हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ करते प्रधान महालेखाकार महोदय, श्री यशवंत कुमार तथा वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, श्री आकाश अवस्थी।

हिंदी कार्यशाला के समापन के अवसर पर श्री यशवंत कुमार महोदय जी सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को संबोधित करते हुए।

हिंदी पखवाड़ा की झलकीयां

हिंदी पखवाड़ा की झलकीयां

हिंदी कार्यशाला के समापन की कुछ झलकियाँ।

हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर पुरस्कार वितरण करते हुए श्री संदीप पांडुले महोदय जी।

दांडी

पंचम अंक, वर्ष-2023